www.thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.01.2017

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

पं. लेखराम

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

पं. मदनमोहन मालवीय

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 40 अंक 1

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 500 रुपये

जनवरी 2017 विक्रम सम्वत् 2073 पौष-माघ

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

प्रकाशन समिति : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

श्रद्धा के देवता स्वामी श्रद्धानन्द

–डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय आज भव्य रूप में खड़ा है एक छोटे से रूप से इतना बड़ा रूप बन जाना कोई छोटी बात नहीं, स्वामी श्रद्धानन्द की यादों को समेटे यह छोटा सा पौधा जो इतना बड़ा व्रक्ष का रूप ले चुका है दुनियां में वैदिक शिक्षा के प्रकाश को फैला रहा है इस विश्वविद्यालय का विश्व में एक अपना ही विशेष स्थान रहा है।

जहां यह विश्वविद्यालय स्थित है वह स्थान अत्यधिक रमणीय है उसमें भी शिक्षा व संस्कारों की पवित्रता लिये यहां का विशाल भवन चारों ओर के सुन्दर वातावरण को देख कर हृदय गद्गद हो उठता है क्यों कि सदैव से मैं सुनता भी आया था परन्तु एक बार शताब्दी समारोह में जाने का अवसर मिला अति सुन्दर था आज वह विश्व विद्यालय अन्य विद्याओं के साथ वैदिक शिक्षा व संस्कारों का स्रोत है। आज यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड में स्थित है उत्तराखण्ड राज्य उत्तर प्रदेश से ही बना है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने ही हरिद्वार के इस सुन्दर स्थान का गुरुकुल हेतु चयन किया था इस यज्ञ के लिये स्वामी जी को एक महान विभूति मिली जिनका नाम चौधरी मुन्शी अमन सिंह था उन्होने अपना कांगड़ी गांव व आस पास की बारह सौ वीघा जमीन दान कर दी 28 मार्च 1902 को गांव कांगड़ी में गुरुकुल स्थापित हो गया। यहां दुर्गम जंगल था जब यह भू भाग दान में मिला तो कनखल जाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने यहीं पर नजीबाबाद के मुंशी अमन सिंह की कोठी पर रहना आरम्भ कर दिया स्वामी जी को आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तंरग सभा ने प्रथम अधिष्ठाता नियुक्त कर दिया था अब यहां का समस्त कार्य स्वामी जी को ही करना था यहां हिंसक पशु आदि रहते

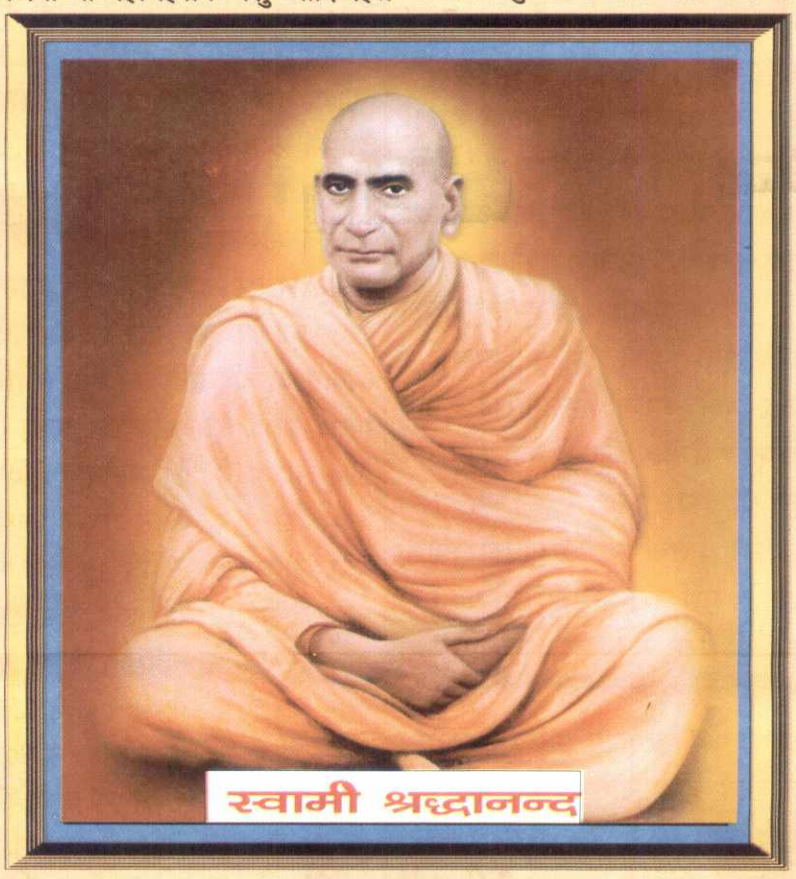
स्वामी श्रद्धानन्द

थे इस भयानक जंगल को साफ कराया तथा घास फूँस की झोंपड़िया बनायी गुरुकुल की स्थापना हो जाने पर तीन दिन 21.22.23 मार्च व 28 मार्च को उद्घाटन उत्सव हुआ जिसमें चौथे दिन फाल्गुन पूर्णमासी को 45 ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार हुआ तब से अब तक यह विश्वविद्यालय सहस्रों महान विभूतियों को शिक्षित कर जन्म दे चुका है जिसकी कीर्ति दूर दूर तक है जिसका विशाल रूप व फैली सुन्दरता तथा कीर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की याद दिलाती है।

यह गुरुकुल कांगड़ी जो आज भव्य विश्वविद्यालय है तब स्थापित हुआ था जब यहां अंग्रेजी राज्य था और यह क्षेत्र निर्जन वन था जहां शाम होने पर कोई जा नहीं सकता था हिंसक जानवर यहां विचरण करते थे। अंग्रेज हमारी संस्कृति को मिटाने को तत्पर थे हमारी पुरातन शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करना चाहते थे तथा संस्कृत शिक्षा को रोक अंग्रेजी का प्रचार कर रहे थे, तथा धर्मान्तरण कर रहे थे हिन्दू जाति को ईसाई बना रहे थे स्थान स्थान पर अंग्रेजी स्कूल खोले जा रहे थे। हिन्दुओं को अपमानित किया जा रहा था ऐसे में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने यह गुरुकुल कांगड़ी खोला और सर्व प्रथम अपने दो पुत्रों का भी इसमें प्रवेश कराया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सत्रह वर्ष तक गुरुकुल के अधिष्ठाता पद को सुशोभित किया आचार्य भी रहे इनका अभी तक नाम मुन्शीराम था फिर महात्मा मुन्शीराम नाम पड़ा बारह अप्रैल 1916 को माया पुर वाटिका कनखल में सन्यास आश्रम में प्रवेश कर स्वामी श्रद्धानन्द बने।

उस समय अंग्रेजी सरकार आर्य समाजियों का विरोध कर रही थी आर्य समाजियों को बागी समझती थी देसी राजा रजवाड़े भी आर्य समाजियों पर अत्याचार करते थे क्योंकि अधिकांशतः राजे रजवाड़े अंग्रेज परस्त थे अंग्रेजो की गुलामी करते थे जैसा अंग्रेज चाहते थे वैसा ही वह करते थे आर्य समाजियों के पीछे गुप्त चर तैनात कर दिये थे ऐसे में जोधपुर

लोहड़ी, मकर सक्रान्ति व गणतन्त्र दिवस की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

www.thearyasamaj.org

रियासत में आर्य समाज मन्दिर से ओ३म् ध्वज वहां की सरकार ने उतरवा दिया था। रियासत पटियाला में चौरासी आर्य समाजियों को गिरफ्तार कर लिया था तथा उनके परिवारों को तंग करने लगे थे महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी ने इस हेतु बहुत प्रयत्न किया पटियाला रियासत ने मुकदमा वापिस ले लिया परन्तु परिवारों को रियासत से बाहर कर दिया था स्वामी जी ने उन परिवारों को गुरुकुल में आश्रय दिया महात्मा जी के प्रयत्नों से रियासत ने अपना हुक्म वापिस ले लिया यह परिवार पुनः अपने घरों को रियासत चले गये। धौलपुर में भी आर्य समाज को तोड़ा गया था स्वामी जी के प्रयत्नों से उसे पुनः बनवाया गया।

सन् 1919 में स्वामी जी राजनीति में आ गये उन्हें राष्ट्र के लिये बहुत कुछ करना था कांग्रेस के मंच से दिल्ली में व्याख्यान दिया उसी समय दिल्ली में विशाल जुलूस निकला जिसके नेता स्वामी जी ही थे चांदनी चौक पर गोरखा सिपाहियों का पहरा था सिपाहियों ने बंदूकों की संगीनें स्वामी जी के सीने पर तान दीं परन्तु स्वामी जी ने इसकी परवाह न कर सीना ताने हुये जुलूस लेकर आगे निकल गये स्वामी जी की जयकार के उद्घोष होने लगे।

1923 में आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना हुई स्वामी जी इसके प्रधान रहे अब स्वामी जी शुद्धि के कार्य में लग गये। मलकाने राजपूतों को शुद्ध किया गया दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दू सभा की स्थापना हुई शुद्धि कार्य को बढ़ाया गया। मुसलमान इस शुद्धि का विरोध करने लगे यहां तक कि स्वामी जी के पास धमकी भरे पत्र आने लगे इसी समय एक दिन असगरी बेगम नाम की एक महिला स्वामी जी के पास अपने बच्चों के साथ आर्य समाज दिल्ली में आई और शुद्ध होने के लिये प्रार्थना की। उसे शुद्ध किया तब से वह दिल्ली में वनिता आश्रम में रहने लगी। उसको ढूंढते हुये उसके पिता व पति भी वहां आ गये और उससे पुनः मुसलमान हो जाने को कहा परन्तु उसने मना कर दिया उसके पति ने स्वामी व चार पांच आदमियों पर मुकदमा दायर कर दिया ।

सन् 1926 (23 दिसम्बर को) राजा राम सिंह को पत्रोत्तर देते समय लिखवाया कि अब यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण करुँ व शुद्धि के अधूरे कार्य को पूरा करुँ।

23 दिसम्बर 1926 को शाम के समय एक व्यक्ति सीढ़ियों से चढ़कर स्वामी जी से इस्लाम के विषय में बात करने हेतु आया मिलने के लिये कहने लगा स्वामी जी ने कहा में बीमार हूँ ठीक हो जाऊँगा तब बात करुँगा।

इस व्यक्ति का नाम अब्दुल रशीद था यहां आकर उसने सेवक से पानी मागा सेवक पानी लेने गया तभी इस व्यक्ति ने पिस्तौल निकाल कर स्वामी जी पर तीन फायर किये सेवक धर्म सिंह उसे पकड़ ही रहा था उसे भी गोली लगी हत्यारा भागना चाहता था स्वामी जी के सेक्रेटरी धर्मपाल ने उस हत्यारे को दबोच लिया पुलिस ने हत्यारे को गिरफ्तार कर लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जब तक जिये राष्ट्र व समाज के निर्माण हेतु आंधी तूफान की भांति कार्य करते रहे चैन से नहीं बैठे वह निर्भीक साहसी कर्मठ देश भक्त योद्धा थे अंग्रेज सरकार के दमन चक्र के आगे भी झुकना व पीछे हटना नहीं सीखा था।

वह चाहते थे कि हमारा प्राचीन गौरव पुनः स्थापित हो अंग्रेज यहां से चले जाये अंग्रेजी मिशनरियां हमारी संस्कृति में विष घोलने का कार्य कर रही थी ईसाई हिन्दुओं को धर्मान्तरण कर रहे थे तथा मिशनरियों को अंग्रेजी सत्ता से पूरी तरह से सहायता प्राप्त हो रही थी ऐसे में महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती बने स्वामी जी ने शुद्धि का कार्य भारत के भविष्य के लिये आवश्यक समझा यही नहीं शुद्धि कार्य पहली बार हुआ हो महर्षि दयानन्द सरस्वती उनके गुरु ने शुद्धि को आरम्भ किया था तथा संस्कृति की पाठशालाएँ भी खोली थीं प्राचीन देवन स्मृति में भी शुद्धि का वर्णन है छत्रपति वीर शिवाजी ने भी शुद्धि करायी थी आज भी शुद्धि कार्य की आवश्यकता है हम अपने धर्म से अलग हुये भाइयों को ही तो पुनः अपने घर वापिस लाना चाहते हैं वह कार्य स्वामी जी ने आंधी की भांति किया।

– चन्द्रलोक कालोनी खुर्जा

भारतीय संविधान-एक विचारणीय तथ्य

डॉ. देवेश प्रकाश आर्य
मो. 9968573439

26 जनवरी अर्थात् गणतन्त्र दिवस 1950 को हमारा भारतीय संविधान लागू हुआ, 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ था, आजादी किस रूप में मिली और कितनी मिली इसके महत्त्व को तो मैं अगस्त मास में ही लिखूँगा, लेकिन जनवरी का महीना भी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होता है, हम सब भारतवासी ये मानते हैं कि 26 जनवरी 1950 में देश को दुनिया का सबसे बड़ा संविधान मिला, इसी की खुशी में हमारे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री इंडिया गेट पर आकर सभी वीर शहीदों को नमन कर देशवासियों को शुभकामनाएँ देते हैं।

मैं व्यक्तिगत रूप से संविधान का बहुत सम्मान करता हूँ एक देश के जिम्मेवार और अनुशासित नागरिक होने के नाते हम सभी को अपने संविधान का अनिवार्य रूप से सम्मान करना चाहिए आज जब हम संविधान द्वारा निर्मित कानूनों को देखते हैं तो पता चलता है कि आजादी से पूर्व के कानून और बाद के कानूनों में कोई खास अन्तर नहीं है। 15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद हुआ आजादी मिलने के बाद संविधान बनाना शुरु किया गया, उस संविधान सभा में 296 सदस्य थे। 11 महीने 18 दिन काम करके संविधान तैयार किया गया लेकिन 11 महीने 18 दिन में काम कुल 166 घंटे हुआ और उस अल्प समय में संविधान तैयार हो गया, भारत का संविधान दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है इसमें 395 अनुच्छेद (ऐक्ट) हैं दुनिया के किसी भी देश में इतना बड़ा संविधान नहीं है तो फिर प्रश्न यह है कि इतना बड़ा संविधान इतने कम समय में कैसे बन गया? जब इसकी जाँच की गई तो पता चला कि संविधान में हमने कुछ खास नहीं बनाया। अंग्रेजों ने जो 34735 कानून बनाए उसी के खास-खास कानूनों को हमने अपना संविधान बना लिया। उसी में कुछ कानून हैं Govt of India At. Indian education Act, Indian Police Act, उनमें जो कुछ लिखा वही सब हमारे संविधान में है, Govt of Indai Act अंग्रेजों ने बनाया था भारत को लूटने के लिए, भारत पर राज करने के लिए, भारत को गुलाम बनाने के लिए, इन्ही सब कानूनों को आजादी के बाद भी हमने स्वीकार कर लिया।

संविधान सभा में कई बड़े-बड़े नेता शामिल थे उसकी एक ड्राफ्टिंग कमेटी बनाई गई जिसके अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे, उन्होंने 1953 में राज्य सभा में बोलते हुए यह कहा था कि यदि मुझे कोई अनुमति दे तो मैं इस संविधान को अस्वीकार कर दूँ तो पत्रकारों ने पूछा कि आप तो इस संविधान के निर्माता हैं आप ऐसा क्यों कह रहे हैं तब डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि भारत के किसी नागरिक का इससे भला नहीं होने वाला, क्योंकि जल्दी-जल्दी में बनाया गया ये संविधान है, इस संविधान में हमने Govt of India Act और दूसरे दुनियाँ के कुछ देशों से कुछ नियम निकालकर ये संविधान तैयार किया है ये पूरा संविधान भारत के लोगों द्वारा तैयार नहीं किया गया परिणाम क्या हुआ कि 70 सालों में 94 से भी ज्यादा संशोधन हो गए हैं, भारत के वीरों ने, बलिदानियों ने जिस कल्पना से आजादी की लड़ाई लड़ी थी वो कल्पना इस संविधान से पूरी होती नहीं दिख रही है।

अंग्रेजों के द्वारा बनाए गए कानूनों को देख महात्मा गाँधी ने कहा था कि इन सभी कानूनों को जला देना चाहिए, आपको ज्ञात होगा कि 1926-27 में, रोलेक्ट एक्ट का सबसे प्रखर विरोध दो महापुरुषों ने किया एक स्वामी श्रद्धानन्द जी जिन्होंने इसके विरोध में दिल्ली में एक विशाल आन्दोलन का नेतृत्व किया था, दूसरे महापुरुष थे लाला लाजपतराय जी उन्होंने जुलूस निकालकर इसका भारी विरोध किया उसी जुलूस में लाजपतराय जी पर Indian Police Act के अनुसार लाठी चार्ज किया गया और उसी लाठी चार्ज

www.thearyasamaj.org

में एक सांडर्स नाम के हत्यारे ने देश भक्त लाला लाजपत राय को पीट पीट कर मार डाला जब ये बात शहीद ऐ आजम भगत सिंह को पता चली तो उन्होंने इसका बदला लेने का संकल्प लिया और हत्यारे सांडर्स को अपनी पिस्तौल की तीन गोलियों से छलनी कर दिया, उस हत्या के अपराध में अंग्रेजी सरकार ने उन्हें फाँसी की सजा सुनाई।

अन्ततोगत्वा मैं यह माँग करना चाहता हूँ कि हमारे देश के संविधान में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए कानून क्यों हैं, हम अपने देश की उन्नति के लिए, अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए गुलामी के कानून क्यों ढो रहे हैं, क्यों न हम शीघ्र ही उन कानूनों को नष्ट करें। अथवा पूर्ण रूप से संशोधित करें।

1950 से अब तक प्रतिवर्ष 26, जनवरी मना रहें हैं आगे भी मनाते रहेंगे लेकिन हमें इसके पीछे की सच्चाई को भी जानने का अधिकार है, हम सभी भारतवासी अपने संविधान और सभी राष्ट्रीय पर्वों का सम्मान करें, राष्ट्र में केवल अधिकारों की चिन्ता न करें बल्कि राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों को भी जानने का प्रयास करें। जय हिन्द, वन्दे मातरम्!

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द 'एक सकारात्मक सोच'

–आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

युगनिर्माता, वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व है। स्वदेश, स्वदेशी और गुरुकुल पद्धति के पक्ष पोषक हैं। इनका सामाजिक और राजनैतिक सुधार के कार्य अविस्मरणीय हैं। वैचारिक स्वतन्त्रता समर के रुप में चिरकाल से उपेक्षित गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनरुद्धार कर ऐसा महान् कार्य किया जो भारतीय इतिहास में अमिट रहेगा। इनका जन्म सन् 1856 में जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में नानकचन्द जी के यहाँ हुआ था। सम्पन्न परिवार से होने के कारण इनकी शिक्षा–दीक्षा इलाहाबाद के म्योर सेन्टल कालेज में हुई। फलतः मुंशीराम जी की रुचि भौतिकवादी थी। काशी और प्रयाग में हिन्दू धर्म की जिन विकृतियों से उनका परिचय हुआ उससे उनके धार्मिक वैचारिक पक्ष अत्यन्त दुर्वल हो गया था। किन्तु बरेली में जब उनका सम्पर्क स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ हुआ तब उनके मन से पूर्णतया भौतिकवादी व पाश्चात्य विचार धारणायें परिवर्तित हो गयीं। स्वामी दयानन्द के उपदेशों का उन पर जो प्रभाव पड़ा उससे जीवन की दिशा ही बदल गयी। महर्षि दयानन्द के कार्य को पूर्ण करने हेतु अपना बलिदान दे कर "वयं तुभ्यं बलिहृत स्याम" वेद मन्त्रों के व्यवहारिक पक्ष को अपने जीवन में उतारा। उनके कार्य, निष्ठा व दक्षता उनको एक सोच के रुप में प्रस्तुत करती है जो सदैव आर्य जनों को प्रेरणा देती रहती है। ध्यातव्य है कि सम्प्रतिकाल में स्वामी श्रद्धानन्द एक व्यक्ति विशेष न होकर एक सकारात्मक सोच हैं, एक शक्ति पुंज है जो महर्षि दयानन्द के कार्यो को करने के लिए प्रेरित करती रहती है। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि अभियान चला कर जीवन प्रद और कर्तव्यसूचक तथा गौरवपूर्ण 'हिन्दुत्व' का प्रचार किया। अन्य शब्दों में वही व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शैल–श्रृगों से महोदधि की उत्ताल तरंगो तक विस्तृत इस भू खण्ड को अपनी पितृभूमि के रुप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान जाति का वंशज है, जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सात सिन्धवों में हुआ था और जो निरन्तर अग्रग्रामी हेता अन्तर्भूत को पचाती तथा महनीय रुप प्रदान करती हुई हिन्दू जाति के नाम से सुख्यात हुई।

उपरोक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

आ सिन्धु सिन्धु पर्यता यस्य भारत भूमिका पितृभूः पुण्यभूश्चैव सर्वै हिन्दू रितिस्मृतः।

स्वामी जी के कर्म–तथा वचन में उपरोक्त संज्ञा का क्रियात्मक रूप देखने को मिलता था। हिन्दुत्व के लिए स्वामी जी द्वारा दिया गया वृहद् प्रयास तभी फलित होगा जब सब सुधी आर्य जन इस दिशा में यथा शक्ति प्रयत्न करेंगे।

सम्पूर्ण देश! स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की इस घड़ी में उनके अनुयायी ऋषि के व आर्यसमाज के अधूरे कार्य को गति पूर्वक आगे बढायें यही उनके प्रति पुनश्च सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ब्रिटिश सरकार को कंपा दिया स्वामी तेरी हुंकार ने।

संगीनो को झुकवा दिया स्वामी तेरी ललकार ने।।

चांदनी चौक साक्षी है स्वामी तेरे शौर्य का।

इक नया इतिहास रचा दिया स्वामी तेरे विचार ने।।

मालवीयजी के जीवन से सम्बन्धित मुख्य तिथियों की सूची

25 दिसम्बर सन् 1861 – प्रयाग में मदन मोहन मालवीय का जन्म
सन् 1878 – कुन्दन देवीजी से मालवीयजी का विवाह
सन् 1884 – कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. परीक्षा में मालवीयजी उत्तीर्ण
जुलाई सन् 1884 – इलाहाबाद जिला स्कूल में अध्यापक
दिसम्बर सन् 1885 – मध्यभारत हिन्दू समाज के समारोह के आयोजन में मालवीयजी का सक्रिय सहयोग
जुलाई सन् 1887 – कालाकांकर में 'हिन्दूस्थान' पत्र का सम्पादन कार्य प्रारम्भ
सन् 1889 – हिन्दूस्थान पत्र का सम्पादन छोड़कर प्रयाग में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ
दिसम्बर सन् 1893 – मालवीयजी का प्रयाग हाईकोर्ट में वकालत करना
सन् 1902–1903 – मालवीयजी के प्रयास से प्रयाग में हिन्दू बोर्डिंग हाउस का निर्माण
सन् 1903–1912 – प्रान्तीय कौंसिल की सदस्यता–मालवीजयी द्वारा कौंसिल में प्रान्त की महत्त्वपूर्ण सेवा
सन् 1904 – काशीनरेश प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में वाराणसी में मालवीयजी का विश्वविद्यालय की स्थापना पर भाषण
जनवरी सन् 1906 – कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में मालवीय जी द्वारा आयोजित सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन। उदार सनातन धर्म का प्रचार। काशी में भारतीय विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय
सन् 1907 – मालवीयजी के सम्पादकत्व में "अभ्युदय" का प्रकाशन, लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों और उदार हिन्दू धर्म का प्रसार।
अक्तूबर सन् 1910 – हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में मालवीयजी का अध्यक्षीय भाषण
11 अक्तूबर सन् 1911 – काशी विश्वविद्यालय की योजना के सम्बन्ध में मालवीयजी और महाराजा दरभंगा की लार्ड हारडिंग से भेंट, लार्ड हारडिंग का प्रोत्साहन
28 नवम्बर सन् 1911 – हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी का गठन
अक्तूबर सन् 1915 – बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी बिल पारित
फरवरी सन् 1916 – बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी का शिलान्यास
दिसम्बर सन् 1916 – कांग्रेस–लीग सुधार योजना
20 अगस्त सन् 1917 – भावी राजनीतिक लक्ष्य के सम्बन्ध में भारत मंत्री की घोषणा
29–31 अगस्त सन् 1918 – बम्बई में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन, गरम दल और नरम दल में सहयोग बनाये रखने के लिए मालवीयजी का प्रयत्न
दिसम्बर सन् 1918 – मालवीयजी की अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन
जुलाई–दिसम्बर 1919 – पंजाब में पीड़ित जनता की सहायता
नवम्बर सन् 1919 – मालवीयजी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के उप–कुलपति।
16 सितम्बर सन् 1922 – लाहौर में मालवीयजी का हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द पर भाषण
31 दिसम्बर सन् 1922 – मालवीयजी की अध्यक्षता में गया में हिन्दू महासभा का विशेष अधिवेशन
अगस्त सन् 1923 – मालवीयजी की अध्यक्षता में काशी में हिन्दू महासभा का अधिवेशन।
अगस्त सन् 1926 – मालवीयजी और लाजपतराय के नेतृत्व में कांग्रेस इंडिपेंडेंट पार्टी का गठन
नवम्बर सन् 1926 – साइमन कमीशन की नियुक्ति। मालीवीयजी आदि नेताओं द्वारा उसके बहिष्कार की घोषणा।
दिसम्बर सन् 1929 – काशी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मालवीयजी का दीक्षान्त भाषण।
20 अगस्त सन् 1930 – दिल्ली में मालवीयजी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी, छः मास की सजा
अगस्त सन् 1934 – कांग्रेस वर्किंग कमेटी द्वारा निर्णय कि वह साम्प्रदायिक निर्णक को न स्वीकार करती है और न उसे रद्द करती है। मालवीयजी और अणे का विरोध और इस्तीफे
अक्तूबर सन् 1934 – बम्बई में कोंग्रेस का अधिवेशन, साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध में मालवीयजी का संशोधन नामंजूर
फरवरी सन् 1935 – मालवीयजी द्वारा आयोजित दिल्ली में साम्प्रदायिक निर्णय विरोधी कान्फरेन्स
जनवरी सन् 1936 – प्रयाग में मालवीयजी के नेतृत्व में सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन, अन्त्यजोद्धार पर प्रस्ताव
सितम्बर 1939 – मालवीयजी का त्यागपत्र और उनके प्रस्ताव पर सर राधाकृष्णन् हिन्दू यूनिवर्सिटी के उपकुलपति
सन् 1941 – गोरक्षा मंडल की स्थापना
12 नवम्बर सन् 1946 – मालवीयजी का निधन

–आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

www.thearyasamaj.org

युवकों! क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं?

–स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
संस्थापक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

पुत्रों! आज मैं तुम्हें उन बंधनों से मुक्त करता हूँ, जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बंधन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बंधन बांध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूँ। इन बंधनों के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसीलिए ये बंधन और भी कड़े हैं। ये बंधन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यो का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूँ।

पुत्रों! परमात्मा सत्यस्वरूप है। उसे प्यारा बनाने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो। धर्म–मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अन्तःकरण ही है। बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वह तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलायेगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो। स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचायेगा। जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है उसे अपने हृदय से पूछो। यह तुम्हारा आचार्य है, मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुमसे केवल एक ही दक्षिणा मांगता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुममें से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं यह कहता हूँ। कि पांचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता, पिता, आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा सुश्रुषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमानी थे। वे कभी पूर्णतया दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूँ कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योति स्तम्भ बनाओ। पढ़ा–पढ़ाया कुछ अंश तक पथप्रदर्शक होता है, पर सच्चे पथ–प्रदर्शक वे महापुरुष ही होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र में ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी, सत्यवादी और पक्षपातरहित महापुरुषों के पथ पर चलो, चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक।

लेना तो सभी संसार जानता है। तुम इस योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारी देह बनी है, जिसकी गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भूमि भारत में रहते हुए तुम उसके यश को उज्जवल करोगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप में उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्त्रों वर्षो से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं। इन्हें गुरु मन्त्र समझो और अपना पथ दर्शक बनाओ। इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षो का सम्बन्ध रहा है। मैं तुमसे गुरुदक्षिणा नहीं मांगता। गुरु दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मांगना मेरा धर्म नहीं है। मैं तुमसे यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनीतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या–क्या है? मैं कवेल तुमसे यही पुछता हूँ कि तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं या नहीं। स्मरण रखो, यह संसार सत्य पर आश्रित है। इसके बिना समाज के नियम पद दलित करने योग्य हैं। यदि सत्य तुम्हाने जीवन का अवलंबन है, तो मुझे न कोई चिन्ता है और न ही कुछ मांगना है।

पुत्रों! आज मुझे कितनी प्रसन्नता है, तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात को देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूँ। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूँ। तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहाँ स्वतन्त्रता रूक नहीं सकती, तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है– मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य को दृढ़ता से पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे भाग कर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है।

उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो, बनावटी मत बनो। सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो, न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वतन्त्र जीवन रखो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा, तो मुझे पूर्ण सन्तोष होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धा जीवन का आराध्य है
श्रद्धा सुमन में भरी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में,
समिधा बन गए श्रद्धानन्द
सत्य का आधार मिला
सद् चिन्तन का व्यवहार मिला
सद् कर्म सदभावना का
संस्कार मिला
इतिहास को नया आकार मिला
श्रद्धावान बनकर मिटाए तुमने
सारे द्वन्द
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में....
अंन्धकार में भटके समुदाय
अपने भी जब लगे पराये
परतन्त्रता का दंश रुलाए
सूझे जब न कोई उपाय
शुद्धि के पावन मंत्र से खोले
सारे बन्द
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में....
सद्ज्ञान का दीप जलाया
गुरुकुलों का भाग्य जगाया
संस्कृति का पथ सजाया
बिछुड़ों को तब गले लगाया
हर कली पुष्प में
चिन्तन की भरने लगी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में
समिधा बन गए श्रद्धानन्द
अंहकार ने राख भरी राष्ट्र के
सुहाग में
कलियाँ पुष्प खूब जले जुल्म की
आग में
विष ही विष भरा हुआ था सत्ता के
नाग में
बहारें जब घायल हुई जलियांवाले
बाग में
अमृतसर मे राष्ट्रीय चेतना का
तुमसे गूँजा शंख
धर्म के यज्ञ समर्पण में समिधा बन
गए श्रद्धानन्द
दयानंद के तुम अनुयायी धर्म के
तुम प्रखर सिपाही
सत्य पथ के तुम हम राही तीन
गोलियाँ सीने पे खाई
भूत–भविष्य–वर्तमान का श्रद्धा से,
जुड़ा सम्बन्ध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में समिधा बन
गए श्रद्धानन्द।।

–विजय गुप्त आशु कवि,
मदनगीर दिल्ली

www.thearyasamaj.org

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति में

–पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धयहूयते हविः।
श्रद्धया कृतयज्ञेन श्रद्धानन्दो भवेश्वरः।।

यों तो आर्यसमाज किसी समय भी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को भुला नहीं सकता, परंतु 1946 ई. का दिसम्बर मास विशेष रूप से स्वामी जी की याद दिलाता है। पूर्वी बंगाल की विपत्ति, नोआखाली का हत्याकाण्ड आदि कई घटनाएँ हैं जो रह–रहकर स्वामी जी की याद दिलाती हैं। स्वामी जी महाराज का जीवन इस समय हमको कितना सहारा देता इसका अनुमान लगाना कठिन हैं। परंतु महापुरुषों की स्मृति का एकमात्र उपयोग यह है कि हम अपने जीवन को उस स्मृति से प्रभावित करें–

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And departing, leave behind us,
Footprints on the sands of time,
Footprints-that perhaps another,
Sailing o'r life's solemn main,
A forlorn and ship-wecked brother,
Seeing, shall take, heart again.
(Longfellow)

संस्कृतानुवाद –

नः स्मारयन्ति त्विह जीवनानि
शुभानि सर्वाणि महाजनानाम्।
स्वजीवनं साधयितुं समर्था वयं
स्मश्च यथा त आसन्।।
अस्मासु मृत्योश्च मुखं गतेषु त्यजेम
चिह्नानि पदाकिंतानि।
आगन्तुकानां सुसहायतार्थं रेणौ तटे
कालमहोदधेश्च।।
इमानि चिह्नानि विलोक्य येन
गंभीरसंसार–समुद्र –यात्री।
दुर्भाग्य–वीच्याहत भग्नपोतः
समुत्सहेतैक हताशबन्धुः।।

भावार्थ यह है कि महापुरुषों के जीवन हमें इस बात का स्मरण कराते हैं कि हम भी अपने जीवन को उन्नत कर सकते हैं और इस संसार से प्रेरणा करते हुए ऐसे चिन्ह कालरूपी

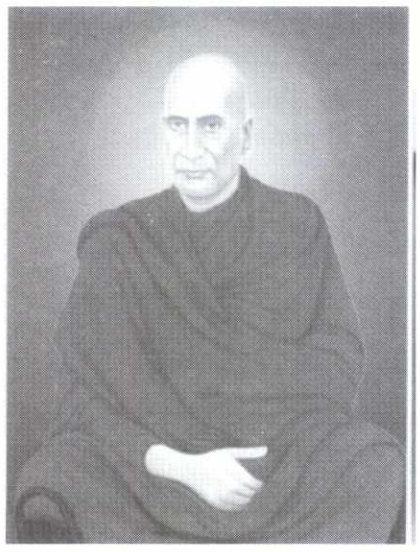

समुद्र की रेत पर छोड़कर जा सकते हैं जिनको देखकर निराश व्यक्तियों के अन्दर भी आशा का संचार हो जाए।

आर्य जाति इस समय संकट में है, इसका जहाज टूटा पड़ा है। चारो ओर से समुद्र में तूफान उठ रहा है। ऐसे समय स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यस्मृति से ही हम अपनी उन्नति के पथ पर चलने में सहायता ले सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज के लिए क्या किया? यह प्रश्न नहीं। प्रश्न तो यह है कि उन्होंने क्या नहीं किया? संगठन, साहित्य और संस्था तोनों विभागों में उनकी बुद्धि और उनके परिश्रम के चमत्कार दिखाई पड़ते हैं। परंतु समय हम एक ही बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करेंगे।

मैं इस समय 'बलिदान भवन' में बैठा हुआ हूँ और बलिदान की बात ही सोच रहा हूँ। सार्वदेशिक सभ के जन्म में पूज्य स्वामी जी विशेष यत्न करते रहे। यहीं इनका प्राणान्त हुआ। अतः सार्वदेशिक सभा पर उनकी अन्तिम छाप है।

जब सार्वदेशिक सभा खोली गई थी इस समय आर्यसमाजों को और विशेषकर शक्तिशाली आर्य समाजों को इसकी कुछ अधिक परवाह नहीं थी। हरएक समाज समझता था कि काम तो चल ही रहा है। परंतु दूरदर्शी लोग जानते थे कि जिस समाज में संगठन नहीं वह चाहे कितना प्रबल क्यों न हो, तूफान के झोंकों को सहन नहीं कर सकता। समाज का ज्यों–ज्यों काम बढ़ा, उसकी कठिनाइयाँ भी बढ़ीं और आवश्यकता प्रतीत हुई कि समस्त आर्यसमाज–जगत् को मिलकर काम करने चाहिए। हमारी सब शक्तियाँ केन्द्रीभूत होनी चाहिएँ। हैदराबाद (दक्षिण) के सत्याग्रह ने दोपहर के सूर्य के समान स्पष्ट कर दिया केन्द्रीय शक्ति में कितना प्रभाव है। उस समय यदि सार्वदेशिक सभा न होती तो हमको कभी सफलता प्राप्त न हो सकती। सिन्ध और सत्यार्थप्रकाश आंदोलन के सम्बन्ध में भी यही बात ठीक जँचती है। इसलिए आवश्यकता है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति को इस प्रकार से मनावें कि समस्त आर्यजगत् की सामूहिक शक्ति एक स्थान पर केन्द्रित हो सके।

सार्वदेशिक सभा के क्षेत्र बहुत विस्तृत हैं। इसको इस भूमण्डल पर कार्य करना है जिसकी परिधि 25000 मील और जिसका व्यास 8000 मील से ऊपर है। आर्यसमाज के क्षेत्र में न केवल सूर्यास्त नहीं होता अपितु सदा मध्याह्न रहता है। इतनी विशाल संस्था की शक्ति और समर्थता कितनी विशाल होनी चाहिए।

इसमें सन्देह नहीं कि सार्वदेशिक सभा की लोकप्रियता बढ़ रही है। अभी हमने नोआखाली के लिए अपील की है और प्रायः सभी आर्यसमाज और भाई अपनी शक्ति के अनुसार धन भेज रहे हैं। उन्हीं के सहारे सभा ने पूर्वी बंगाल में अपने सहायता के क्षेत्र खोले हैं और आर्य जनता को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि उनके काम को लोग प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे हैं।

परंतु हमको केवल विपत्ति के समय ही तो काम नहीं करना। हमारा अधिक उपयोगी काम तो शांति के समय होना चाहिए। बाह्य आक्रमणों से बचाने के अतिरिक्त हमारा मुख्य काम यह है कि हमारी आन्तरिक शक्ति बढ़े और हमारे काम में नैरन्तर्य हो। मैं देखता हूँ कि इसमें बहुत बड़ी कमी है। सभा के साधन बहुत ही संकुचित हैं । मैं यहाँ दो–एक बातें लिखता हूँ –

(1) आजकल बिना एक अखबार के अपनी आवाज़ जनता तक नहीं पहुँचाई जा सकती। कांग्रेस की ओर देखो! इसके कितने पत्र हैं जो कांग्रेस की नीति को प्रतिदिन प्रातःकाल संसारभर में फेला देते हैं। क्या आर्यसमाज का कोई एक भी ऐसा पत्र है? यह ठीक है कि पत्र निकालने में पैसा लगता है, परन्तु पत्रके बिना कितना अधूरा रहता है! हमको दूसरों के मुखों से बोलना पड़ता है और वे नहीं चाहते कि वे हमारी आज्ञा पर अपना मुँह खोला करें। उनको क्या गरज पड़ी? हम गूँगे हैं। हमारा गूँगापन दूर होना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के पास एक बढ़िया प्रेस और एक श्रेष्ठ अखबार होना चाहिए। केवल भारतवर्ष में ही 50 लाख आर्य और 2000 से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि 50 लाख के चौथाई अर्थात् 12 लाख आर्य चार–चार आने इस काम के लिए दें तो प्रेस और पत्र दोनों चल सकते हैं।

(2) सभा के पास एक अच्छा प्रकाशन–विभाग होना चाहिए जिसमें सब प्रसिद्ध भाषाओं का साहित्य होना चाहिए। इसे व्यापारिक ढंग पर चलाया जाए जिससे प्रचार में कठिनाई न हो। एक लाख की पूँजी से यह काम आरम्भ किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए एक ऐसे अनुभवी सज्जन की आवश्यकता होगी जिसको व्यापार और साहित्य दोनों से प्रेम हो। आर्य समाज में साहित्यकारों का अभाव नहीं है। अभाव है उन साधनों का जिनसे साहित्य में वृद्धि हो सकती है।

(3) तीसरी चीज है संगठन। आर्यसमाजियों को पाश्चात्य लड़ाई–झगड़ों को देखकर यह विश्वास हो गया है कि लड़ाई–झगड़े उन्नति के चिह्न और उन्नति के साधन हैं। अतः हममें से जो शक्तिशाली हैं वे संगठन को ढीला करने में अपनी शान समझते हैं। इससे जन, धन और शक्ति तीनों का ह्रास होता है। परन्तु कठिनाई यह है कि यह तीसरी बात किससे कही जाए? जो मानने को तैयार हैं वे लड़ते नहीं और जो लड़ते हैं उनको हमारी बात सुनने का अवसर या अवकाश नहीं। फिर भी कुछ तो करना ही होगा।

यह तो मानना ही होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी अब आकर हमारी विपत्तियों को दूर नहीं कर सकते। अब वे हमारे मध्य में नहीं हैं। अब तो हमको केवल उनकी स्मृति से ही शिक्षा ग्रहण करनी है। स्मृति मनाने का यह अर्थ तो है नहीं कि हम हाय–हाय करें और ताज़ियों की तरह अपनी छाती पीटें। हमारा कर्त्तव्य तो यह है कि जो काम श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को बहुत प्रिय था उसको बढ़ाने का यत्न करें।

–'गंगा ज्ञान सागर'

पुस्तक से साभार

www.thearyasamaj.org

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के नियमन चुनाव दिनांक 14-11-2016 को गठित आगामी तीन वर्षों के लिए नवीन कार्यकारिणी

संरक्षक

1. श्री रामनाथ सहगल जी
2. श्री हरबंशलाल कोहली जी 0124-6900019
3. श्री अशोक सहगल जी 9811455506
4. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी 9718479970
5. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी
6. श्रीमती ललिता निझावन जी
7. श्री विजय गुप्त जी 29958924, 9313161393
8. श्री जगदीश गांधी जी

प्रधान

श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी 9873354458

वरिष्ठ उप-प्रधान

श्री रणबीर सिंह जी 9818281981

उप-प्रधान

1. श्रीमती आदर्श सहगल जी 9266101941
2. श्री कीर्ति शर्मा जी 9871277922
3. श्री ईश कुमार नारंग जी, 9911160975
4. श्री सत्यप्रकाश आर्य जी 9871414790
5. श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी 9968264375

महामन्त्री

श्री चतर सिंह नागर जी 9211501545

मन्त्री

1. श्री बलदेव राज जी 9312220135
2. श्रीमती सावित्री शर्मा जी
3. श्रीमती सन्तोष वधवा जी 9868616260
4. श्री सूर्यपाल सिंह जी 9999176667
5. श्री राजीव भाटिया जी 9911100825
6. श्री राजेन्द्र वु मार दुर्गा जी 9818087360
7. श्री सुभाष चन्द्र चांदना जी 9811544581
8. श्री धर्मवीर पंवार जी 9873068674

कोषाध्यक्ष

1. श्री सुरेन्द्र गुप्त जी 9968634685

सह-कोषाध्यक्ष

श्री ओमवीर सिंह जी 9868803585

कानूनी सलाहकार

श्री सुरेश चुघ जी 9811167514

प्रतिष्ठित सदस्य

1. श्री शिव कुमार मदान जी 9310474979
2. श्री अशोक सहदेव जी 9350563774
3. श्री विजय कुमार बत्रा जी 9899822992
4. श्री वी. वे . गुप्ता जी
5. श्री विनोद कद जी 9953771982
6. श्री रवि चड्ढा जी

अन्तरंग सदस्य

1. श्री पूर्ण सिंह डबास 9818211771
2. श्री रवि गुप्त जी 9871000741
3. श्री वासन्ती चौधरी जी
4. श्री स्वदेश पाल गुप्ता जी 9718599990
5. श्री भीमसैन कामराह जी 9212715554
6. वै . प्रेम वु मार वलेचा जी 22755144
7. श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी 9810254630
8. श्री नाहर सिंह वर्मा जी 27481996, 9868892410
9. श्री वे . एल. राणा जी
10. श्रीमती तारा धींगरा जी
11. श्री भीष्म लाल जी
12. श्री एस. एम. गुप्ता जी
13. श्री राजेश मैंदीरत्ता जी 9899248258
14. श्री जितेन्द्र डाबर जी 9811802238
15. मेजर एस. पी. कोहली जी 9873133440
16. श्री जगदीश नाथ भाटिया जी 22468181
17. श्री सुरेन्द्र शास्त्री जी
18. डॉ. जे. एस. वालियान जी
19. श्रीमती जगदीश वधवा जी
20. श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी
21. श्री दीप नारायण मिश्रा जी 9818748757

सदस्य

1. श्री अजय सहगल जी 9810035658
2. श्री शशिकान्त जी 9871531698
3. श्री अशोक वु मार सरदाना जी 9811026250
4. श्री हरीचन्द आर्य जी 9250068807
5. श्री देवराज अरोड़ा जी 9810702763
6. श्री भवनेश कुमार गौड़ जी 8826154555
7. श्रीमती गीता झा जी 9871531698
8. श्री रमेश गाड़ी जी
9. श्री इन्द्रदेव गुलाटी जी 08958778443
10. श्री सुरेन्द्र आर्य जी 9811476663
11. श्री योगेश कुमार आर्य जी 7838153378
12. श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य जी 9810631962
13. श्री योगेन्द्र शास्त्री जी 9873282661
14. श्री बनारसी सिंह जी 26821038
15. आचार्य श्याम लाल जी 'प्रिसिंपल'
16. श्री ओ.पी. सपरा जी 9818180932
17. श्री रमेश आर्य जी
18. श्री विद्या भूषण गुप्ता जी 9811675204
19. श्री राजेन्द्र आर्य जी 'हांसीवाला' 8376815237

डॉ. पूर्ण सिंह डबास रचित-

पुस्तकों का लोकार्पण एंव विवेचन समारोह

डा॰ पूर्ण सिंह डबास द्वारा लिखित और भारत सरकार के आर्थिक अनुदान से मुद्रित 'भारतीय सैन्य शब्दों की रोचक कहानियाँ' नामक पुस्तक का लोकार्पण एंव विवेचन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह का आयोजन अरावली फाउंडेशन फोर ऐज्यूकेशन, अनन्य प्रकाशन तथा महाराजा सूरजमल प्रौद्योगिकी संस्थान के सौजन्य से संस्थान के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर पूर्व डीन ऑफ कॉलेजिज डा॰ एस॰ एस॰ राणा (जिन को यह पुस्तक समर्पित की गई है), प्रो॰ नित्यानन्द तिवारी, श्री सुधीर सक्सेना (सम्पादक 'दुनिया-इन दिनों'), प्रो॰ अजय तिवारी, डा॰ नरेन्द्र शुक्ल, सूरजमल समारक शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री एस॰ पी॰ सिंह ने पुस्तक का लोकार्पण करते हुए इस के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यवाही का संचालन युवा समीक्षक श्री आशीष मिश्र ने किया। कार्यक्रम में भाग लेने आए प्रबुद्ध श्रोताओं और विभिन्न विषयों के विद्वानों से संस्थान का सेमिनार हॉल खचाखच भरा हुआ था। यह सुखद संयोग ही कहा जाएगा कि इस कार्यक्रम के तय हो जाने के बाद डा॰ डबास की तीन और पुस्तकें : 'हिंदी में देशज शब्द' (शोध कार्य), 'चरण धूलि इंटर नेशनल' तथा 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (दोनों हास्य-व्यंग्य) भी छप कर आ गई । परिणामतः इसी दिन एक के स्थान पर चार पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

कार्यवाही के आरंभ में पुस्तक के लेखक डा॰ पूर्ण सिंह डबास ने पुस्तक लिखने की पृष्ठ भूमि का संक्षेप में उल्लेख करते हुए श्रोताओं के सामने पुस्तक के वर्ण्य विषय और उसके महत्त्व की चर्चा की। प्रो॰ अजय तिवारी ने कहा कि उन्होंने पूरी पुस्तक को ध्यान से पढा है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि यह भाषा विज्ञान की पुस्तक तो है ही यह इतिहास लेखन के लिए भी एक दिशा बोध देती है। उन्होंने कहा कि डा॰ राम विलास शर्मा ने तीन खंडों में प्रकाशित अपने कार्य 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी' में जिस भाषायी परिवेश का व्यापक चिन्तन प्रस्तुत किया है उसके एक विशिष्ट अंग को डा॰ डबास ने आगे बढ़ाया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। डा॰ नरेन्द्र शुक्ल ने कहा : 'यह विषय मेरे लिए नया था अतः इस पर बोलने के लिए मैंने अपनी संस्था के विशाल पुस्तकालय में इस तरह की किसी पुस्तक को खोजने की कोशिश की । मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य था कि इस विषय पर न केवल हिंदी में बल्कि अंग्रेजी में भी कोई पुस्तक नहीं है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मैं डा॰ डबास को बधाई देता हूँ।' उन्होंने किसी नई पुस्तक और उसके पाठक के संबंधों की चर्चा करते हुए कहा :'जब कोई पाठक किसी नई पुस्तक को पढ़ना शुरू करता है तो पाठक और पुस्तक में एक संघर्ष होता है। इस संघर्ष में यदि पाठक जीत जाता है तो वह पुस्तक को एक तरफ पटक देता है और यदि पुस्तक जीत जाती है तो वह उसे पूरे ध्यान से पढ़ता है। जब मैंने इसके आरंभिक दो अध्याय पढ़े, जो कि संस्कृत की सैनिक शब्दावली और सैन्य संगठन पर आधारित थे तो पुस्तक मुझसे हारने लगी लेकिन जब मैंने आगे के अध्यायों पर नजर डाली तो मैं हार गया और मैंने पुस्तक को पूरे ध्यान से पढा और मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भारतीय सैन्य शब्दावली पर यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है।'

श्री सुधीर सक्सेना ने पुस्तक के विभिन्न पक्षों को उजागर करते हुए कहा कि यह पुस्तक साहित्य भी है, भाषा-विज्ञान भी है और शब्द कोश भी है। वस्तुतः यह शब्द-योजना (क्पबजपवद) से शब्दकोश (क्पबजपवदंतल) तक का सफर है। ऐसे खोज पूर्ण कार्य के लिए डा॰ डबास साधुवाद के पात्र है। हमें आशा करनी चाहिए कि भविष्य में भी उनकी लेखनी से ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य प्रकाश में आएंगे।

डा॰ एस॰ एस॰ राणा ने पुस्तक के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डा॰ डबास की शब्द योजना अद्भुत है। वे शब्द शिल्पी या शब्दों के स्वर्णकार है जो उन्हें बहुत बारीकी से गढ़कर अपने कथ्य में सौन्दर्य और प्रभाव पैदा करते हैं। वे ऐसे जटिल विषय में भी अपने पाठक को साथ लेकर चलते है और ऊबने नहीं देते।

कार्यक्रम के अन्त में श्री एस॰ पी॰ सिंह ने डा॰ डबास के हास्य-व्यंग्य की भी चर्चा की और कहा : 'हास्य-व्यंग्य' बहुत अनुभवी लेखक ही लिख सकता है। मैंने उनकी अनेक हास्य व्यंग्य रचनाएँ पढ़ी हैं जो सामाजिक विसंगतियों को बहुत प्रखरता से उजागर करती हैं'। उन्होंने डा॰ डबास को उनके सतत लेखन के लिए बधाई देते हुए कहा कि मुझे उम्मीद है कि हमें जल्दी ही उनकी आगामी रचना का लोकार्पण करने का अवसर प्राप्त होगा। अन्त में उन्होंने सभी उपस्थित महानुभावों के प्रति भी आभार प्रकट किया।

शुद्धि संस्कार

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश के दो स्थानों पर 15 विधर्मी परिवारों की शुद्धि संस्कार करवाकर पुनः वैदिक हिन्दू धर्म में प्रविष्ट करवाये गये। यह परिवार लगभग 60 वर्ष पूर्व विधर्मियों के बहकावे में आकर विदेशी मत अपनाये हुए थे। शुद्ध हुए लगभग 70 की संख्या स्त्री-पुरुष एवं बच्चे थे। यह शुद्धि संस्कार शुद्धि सभा के प्रचारक श्री आसाराम के द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

www.thearyasamaj.org

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता, प्रखर राष्ट्रवादी, सूक्ष्मदर्शी, कुशल संगठनकर्ता और ओजस्वी वक्ता नेताजी सुभाषचंद्र बोस आधुनिक भारत के महापुरुषों में अग्रगण्य हैं। नेताजी ने भारत की आजादी के लिए कठिन संघर्ष किया। उन्होंने ही 'जयहिंद' का नारा दिया, जिसे पूरे देश ने स्वीकार किया। देश के बाहर जाकर उन्होंने आज़ाद हिंद सेना और आजाद हिंद सरकार का गठन किया। दोनों ही सेना के अध्यक्ष के पद पर रहकर दोनों का कुशल संचालन किया। आज़ाद हिंद सेना से उन्होंने कहा 'तुम मुझे खून को, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।' उनके इस उत्साहजनक वक्तव्य से प्रेरित होकर उस सेना ने 'दिल्ली चलो' को घोष किया और वर्मा से अपना विजय अभियान शुरू किया। वे ब्रिटिश सेना को रौंदते हुए आसाम तक चले आए। देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' और बाहर से 'आज़ाद हिंद सेना' के प्रहार से अंग्रेजी सरकार हिल गई और भारत को स्वतंत्र करने को बाध्य हो गई। भारत की आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष करने वाले सुभाषचंद्र बोस आज भी भारतीय जनमानस में सादर प्रतिष्ठित हैं। जीवन का एक-एक क्षण मातृभूमि के लिए अर्पित करने वाले नेताजी के विषय में 1936 ई. में अंग्रेज सरकार ने कहा था– "सुभाष बोस जैसा तीक्ष्ण बुद्धि और संगठत क्षमता का व्यक्ति किसी भी राज्य के लिए खतरनाक होगा।"

हिन्दुस्तान की सारी जनता जानती है कि जब सन् 1939 ई. त्रिपुरा कांग्रेस अधिवेश में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए दो प्रत्याशियों के बीच खुला मतदान हुआ। एक तरफ सुभाष बाबू थे और दूसरी तरफ डॉ. पट्टाभिरामय्या, जिनको महात्मा गांधी का वरदहस्त एवं समर्थन प्राप्त था। अध्यक्ष पद के मतदान में सुभाष बाबू निर्वाचित हो गए। महात्मा गांधी ने कहा, 'पट्टाभिरामय्या की हार मेरी हार है।' इसका फल यह हुआ कि मातृभूमि के योग्यतम पुत्र ने स्वाभिमान के साथ कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और अपना अलग संगठन 'फारवर्ड व्लाक' के नाम से स्थापित किया। इस प्रकार उनके जीवन की सारी घटनाएं प्रेरणाप्रद हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है:

बाधाएं कब बांध सकी हैं, आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएं कब रोक सकी हैं, मरकर जीने वालों को।।

18 अगस्त 1945 ई. को फारमोसा के ताइपेह नामक स्थान पर वायुयान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु का समाचार मिला। लेकिन देश की जनता ने इस समाचार पर विश्वास नहीं किया। स्वतंत्र भारत की सरकार ने इस दुर्घटना की सत्यता के लिए आयोग नियुक्त किया। परंतु उसके प्रतिवेदन पर भी जनता ने विश्वास नहीं किया। एक बार तो कुछ लोगों ने घोषणा कर दी कि नेताजी अमुक दिन कानपुर में प्रकट होंगे। लाखों की भीड़ इकट्ठा हुई किन्तु नेताजी नहीं आए। पुनः बिहार के एक साधु को नेताजी कहा गया और लोग उस साधु का दर्शन करने जाने लगे। भीड़ से परेशान होकर वह साधु कहीं लापता हो गया। आज भी जनता का एक वर्ग नेताजी को जीवित मानता है। पुनश्चापि, अब नेताजी के जीवत होने की संभावना अत्यंत क्षीण है। नेताजी आज भी हर भारतीय जनमानस के हृदय में सश्रद्ध बसे हुए हैं। नेताजी निर्भय स्वतंत्रता सेनानी, कर्मयोगी और अभूतप्रिय लोकप्रिय राष्ट्रसंत के रूप में भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। 23 जनवरी का उनका जन्मदिन हमें यही संदेश दे रहा है कि हम भारतीय प्रण करें, व्रत लें कि नेताजी द्वारा दी गई स्वर्णिम आजादी को हम न किसी के पास गिरवीं रखेंगे और न ही रखने देंगे।

संसार नमन करता जिसको , ऐसा कर्मठ युग चेता था।
अपना सुभाष जग का सुभाष, भारत का सच्चा नेता था।

–शैलेश प्रकाश, गुरुकुल गौतम नगर

श्री चतर सिंह नागर जी द्वारा एकत्रित सहयोग राशि

आर्य समाज, जोरबाग, नई दिल्ली–110003	10,000/–
प्रधान– श्री भगवत प्रसाद गुप्ता जी, दिसम्बर माह 2016 के शुद्धि समाचार–प्रकाशन हेतु।	
आर्य समाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली–110029	8,000/–
प्रधान – श्री रविदेव गुप्ता जी, जनवरी 2017 माह के शुद्धि समाचार प्रकाशन हेतु।	
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री (भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा)वार्षिक सहायता	6,000/–

दिसम्बर –2016 के आर्थिक सहयोगी

श्री मुंजाल शोवा लिमिटेड, इन्ड. एरिया गुड़गांव	वार्षिक सहायता	1100/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15 ऐ, फरीदाबार	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	750/–
श्री यशपाल शास्त्री जी, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली		600/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
आर्य समाज, जी–बिल्डिंग, चौक बाजार, दार्जिलिंग		500/–
श्रीमती वासन्ती चौधरी जी मंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती उमा बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री हरबंसलाल कोहली जी, संरक्षक शुद्धि सभा		500/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, आर्य समाज विशाखा एन्कलेव पीतमपुरा	मासिक	100/–

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती वरद कामिनी जी, मुम्बई		5001/–
श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,	मासिक	500/–
श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,		200/–
श्री सुहास अरोड़ा जी, मुम्बई		100/–
श्रीमती संतोष चावला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,		100/–
सुश्री मोना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,		100/–
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,		100/–
श्रीमती निर्मला शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,		50/–

श्रीमती संतोष वधवा जी मंत्री शुद्धि सभा द्वारा एकत्रित दान एवं पत्रिका शुल्क

श्रीमती रमा खुराना जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		500/–
श्रीमती पूनम पाहवा जी, सैक्टर–23, गुड़गांव, हरियाणा	आजीवान	300/–
श्रीमती प्रीति भारद्वाज जी, सन्तनगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, न. दिल्ली	आजीवन	300/–
श्रीमती संतोष वधवा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली		500/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान

श्री मदन लाल तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		675/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		325/–
श्री विजय अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	300/–	
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली		300/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली		300/–
श्री अजय जी अरोड़ा, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		250/–
श्री संजय अरोड़ा जी, ओमैक्स/ओसाका सैक्टर–86, फरीदाबाद हरियाणा		250/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सैक्टर–16 फरीदाबाद		225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		225/–
श्री कृष्ण लाल टुटेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		150/–
श्री सुरेश जी भारत आप्टीकल्ज सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा		150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, औमेक्स हाईट्रक्स		150/–

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अधिकारियों की एक बैठक 17 दिसम्बर 2016 को संम्पन्न हुई जिसमें श्रीमती आदर्श सहगल जी के निवेदन पर उपस्थित सभी अधिकारियों ने अपनी ओर से सौ–सौ रुपये की राशि और श्री कोहली जी एवं श्रीमती संतोष वधवा जी ने 500/–, 500/– की राशि प्रदान की।

www.thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-01-2017 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17

सेवा में,

शुद्धि समाचार
जनवरी – 2017

संक्रान्तियां और भ्रान्तियां

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,
अध्यक्ष, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली

मकर संक्रान्ति का पर्व सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी रूप में बड़ी श्रद्धा-भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उत्तर भारत में मकर संक्रान्ति, पंजाब में लोहड़ी व माघी तथा दक्षिण भारत में इसे पोंगल के रूप में प्रति वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन काल से निवृत होकर उत्तरायन काल में प्रवेश कर जाते हैं। इसी मान्यता के अनुसार दक्षिणायन काल को अशुभ और उत्तरायन काल को शुभ माना जाता है। धर्म ग्रन्थों में उत्तरायन को देवयान भी कहा गया है। मान्यता के अनुसार इस काल में प्राण त्यागने वाले प्राणी की सद्गति हो जाती है, उसे देवपद प्राप्त हो जाता है। इस संदर्भ में विद्वान लोग महाभारत काल में शरशैय्या पर पड़े भीष्मपितामह का उदाहरण भी दिया करते हैं। मकर संक्रान्ति के सम्बन्ध में जो रूढिवादी परम्परायें स्थापित हो चुकी हैं, उनमें प्रातः काल उठकर पवित्र नदियों व सरोवरों आदि में स्नान करना तथा यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ व दान-दक्षिण आदि कर्म करना, क्योंकि ऐसा करने से उसके पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं और वह पुण्य का भागी बनता है। वैसे वेद-शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को यह शुभ कर्म प्रतिदिन करने चाहिए। वर्ष भर तो अशुभ कर्म करते रहें और किसी पर्व के दिन थोड़े से शुभ कर्म कर लेने मात्र से पिछले सब पाप-ताप नष्ट हो जायेंगे, यह केवल अविद्याजन्य और मूर्खों को बहकाने की बातें हैं और केवल पौराणिक पोपों की पेट-पूजा व उनके पूर्वजों द्वारा स्थापित दुकानदारी को यथावत् जारी रखने षड़यंत्र मात्र है।

सर्वप्रथम तो हमें यह जान लेना उचित होगा कि क्या 14 जनवरी को मनायी जाने वाली मकर संक्रान्ति और 14 अप्रेल को मनायी जाने वाली वैशाखी पर्व वैदिक पर्व हैं? क्योंकि ईशवी तिथियों में नियत किये गए पर्व वैदिक पर्व हो ही नहीं सकते। अपितु अंग्रेजों की दासता के समय प्रारम्भ किये गये पर्व विशुद्ध पौराणिक पर्व हैं। महाभारतकालीन भीष्मपितामह के दृष्टान्त से इस पर्व के साथ सम्बन्ध जोड़ना, इस पर्व को प्राचीन सिद्ध करने की नितान्त पौराणिक सम्प्रदायों की कल्पना मात्र है। महाभारत काल में केवल चन्द्रमास पर आधारित काल गणना होगी थी। आर्यो के लगभग सभी पर्व/त्योहार चन्द्र मास पर आधारित तिथियों, पूर्णिमा व अमावस्यादि तिथियों पर आधारित होते थे, जैसे-होलिका, गुरु पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, दीपावली, विजयादशमी और नवरात्रे आदि।

हमारी पृथवी लगभग 365 दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है, इसे एक सौर वर्ष कहा जाता है। पृथिवी की इस परिक्रमा को 30-30 अंश पर बारह स्थानों/राशियों में विभाजित करने पर मुध-माधव आदि बारह और मास बनते है और संक्रान्तियां एवं राष्ट्रीय शक सवंत् इन्हीं सौर मासों पर आधिारित हैं। दूसरी पद्धति चन्द्र मास पर आधारित है। पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा जितने दिनों में पृथिवी की एक परिक्रमा करता है उसे एक चन्द्र मास कहा गया है। हमारे अधिकतर त्योहार/पर्व चन्द्र मास पर आधारित है। पूर्व काल में केवल युग गणना ही प्रचलन में थी, किन्तु महाभारत के कुछ काल पश्चात् 2067 वर्ष पूर्व विक्रमी संवत्, जो चन्द्र मास पर आधारित है और इसके बाद 1932 वर्ष पूर्व शक संवत प्रारम्भ हुआ था जोकि पूर्णरूपेण सौर मासों पर आधारित है। राशि परिवर्तन के साथ ही प्रत्येक सौर मास भी प्रारम्भ होता है। किन्तु अंग्रेजों की दासता के पश्चात् मकर संक्रान्ति/माघी और मेष संक्रान्ति/वैशाखी को ईशवी सन् के साथ जोड़कर 14 जनवरी और 14 अप्रैल के दिन निश्चित करके मनाना अपनी संस्कृति और खगोल विज्ञान को नकारना है। इन लोगों को यह तथ्य जान लेना चाहिए कि वर्तमान ईशवी कलैण्डर की गणना का आधार मात्र 457 वर्ष पुराना है।

हमारी पृथिवी सौर मण्डल अर्थात्-सूर्य परिवार की एक सदस्य है। सौर पण्डल में कुल नौ ग्रह और इन ग्रहों के अनेक उप ग्रह हैं। सूर्य के नौ ग्रह-बुध, शुक्र, पृथिवी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण व यम हैं। हमारी पृथिवी का एक उपग्रह चन्द्रमा है। पृथिवी 60 के कोण पर सीधी न खड़ी होकर लगभग 66.5 के कोण पर उत्तर की ओर झुकी हुई है। पृथिवी के इसी झुकाव के कारण दिन-रात छोटे-बड़े व ऋतुएं आदि बनती हैं। पृथिवी की तीन गतियां हैं- (प्रभम) अपनी धुरी पर चौबीस घण्टों में एक चक्कर लगाना, (द्वितीय) लगभग 365 दिनों में सूर्य का एक चक्कर लगाना जिसे एक सौर वर्ष कहा जाता है और (तृतीय) सूर्य के साथ आकाश गंगा/निहारिका में घूमना। पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा लगभग 29.5 दिनों में पृथिवी की एक परिक्रमा पूरी करता है, जिसे चन्द्र मास कहा जाता है। हमारे अधिकतर त्योहार/पर्व चन्द्र मास पर आधारित हैं। पूर्णिमा और अमावस्या आर्य/हिन्दुओं के मुख्य पर्व हैं और होलिका व दीपावली आदि पर्व भी इन्हीं तिथियों में आते हैं। बहुत से पढ़े-लिखे सज्जनों को शायद यह भी ज्ञान नहीं है कि सूर्य और चान्द को ग्रहण क्यों और कैसे लगता है? चन्द्रमा पूर्णिमा तक कैसे बढता है और पूर्णिमा के बाद घटना कैसे है? पूर्णिमा को चान्द पूरा क्यों दिखाई देता है और अमावस्या को अदृश्य क्यों हो जाता है? जोकि यह अन्तरिक्ष में घटने वाली साधारण सी घटनायें हैं। पूर्व कथन के अनुसार चन्द्रमा द्वारा पृथिवी की एक परिक्रमा करने पर एक चन्द्र मास बनता है। चन्द्रमास के दो पक्ष हैं, एक शुक्ल पक्ष और दुसरा कृष्ण पक्ष। प्रकृति के नियमानुसार चन्द्रमा की यह यात्रा शुक्ल पक्ष की एकम् को प्रारम्भ होती है और अमावस्या को समाप्त हो जाती है। अतः प्रत्येक चन्द्र मास शुक्ल पक्ष की एकम् से प्रारम्भ होकर अमावस्या को पूर्ण होता है, किन्तु यहाँ तो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हजार-पन्द्रह सौ वर्षो से उलटी गंगा बह रही है। मास कृष्ण पक्ष की एकम् से प्रारम्भ हो रहा है और सब बिना विचारे उसे मानते जा रहे हैं। संवतसर (वर्ष), युग संवत् और सृष्टि संवत् आदि सभी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ होते है, किन्तु चैत्र आदि सभी मास कृष्ण पक्ष की एकम् से ही प्रारम्भ करते हैं और इस उलटी गंगा के कारण प्रत्येक मास में 15 दिनों की गड़बड़ हो रही है, जिसके कारण कई पर्व गलत तिथियों और गलत मास में मनाये जाते हैं। अब इन बातों को विचारने के लिए तो किसी के पास समय ही नहीं है। किसी भी शुभाशुभ तिथि में पर्व मना लो, क्या फर्क पड़ता है? अवश्य पड़ता है, क्योंकि अशुभ तिथियों में त्योहार व पर्व मनाना अलाभकारी व अमंगलकारी होता हैं। ऋषि-मुनियों द्वारा प्रारम्भ किये गए त्योहार/पर्व/व्रत आदि प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं और इनका असमय पर मनाने का कोई औचित्य या लाभ नहीं है।

शुद्धि संस्कार

स्वामी श्रद्धानन्द की शुद्धि क्रान्ति ने लाखों मलकाने राजपूतों को यवन मत की दल-दल से निकाल कर पुनः वैदिक धर्मी बनाया, उन्ही से प्रेरणा लेकर आर्यो का शुद्धि चक्र चलाकर बहुत से भटके हुए जनों आर्यत्व का मार्ग दिखाया। जहाँ एक ओर यवनों को हम अपने में मिला रहे थे वहीं विधर्मियों की मिश्नरियाँ भी कुठाराघात कर हिन्दूओं के गरीब परिवारों को विधर्मी बना रहीं थी। इनसे निपटने को शुद्धि सभा के प्रचारकों ने बीणा उठाया।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर बरेली (उ.प्र.) के एक गांव में शुद्धि कार्यक्रम हुआ। प्रेम सागर ने वपतिस्मा लेकर अपने पूरे गांव को इस दल-दल में धकेला प्रेम सागर की शादी निकाह द्वारा विधर्मी मत से सम्पन हुई थी। हमने प्रेम सागर को वैदिक धर्म क्या है यह समझाया और कुछ साहित्य दिय जिससे प्रेरित होकर पूरे गाँव ने विधर्मी मत छोड़ वैदिक धर्म अपनाया। इसमें 23 महिलाएं व छोटी बच्चियाँ 15 पुरुष व 7 बच्चे प्रमुखरूप से रहे। इस अवसर पर अजय पाल विश्वमुनी वानप्रस्थी सियाराम काजल पवन आदि उपस्थित रहे। शुद्धि यज्ञ प्रणव शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया।

मुद्रक, व प्रकाशक - रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सम्पादक : डॉ. देवेश प्रकाश आर्य